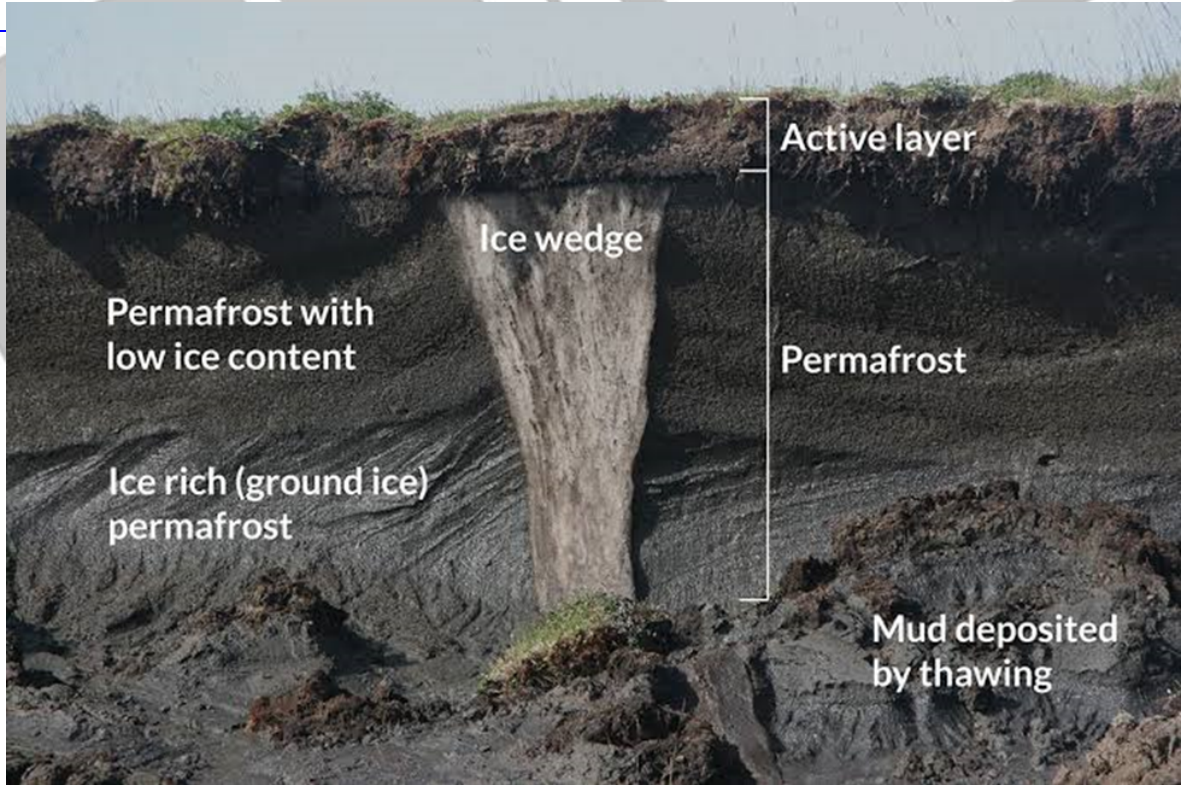


हमिलयी आपदाओं पर परमाफ्रॉस्ट क्षरण का प्रभाव

स्रोत: द हट्टि

भारत के आर्कटिक अभियान के एक भाग के रूप में **ग्लेशियोलॉजिस्ट**, जलवायु परिवर्तन के कारण हमिलय में आपदा जोखिमों का आकलन करने के लिये **परमाफ्रॉस्ट** क्षरण पर शोध कर रहे हैं।

- परमाफ्रॉस्ट अथवा स्थायी तुषार-भूमिवह भूमा है जो कम-से-कम दो वर्षों तक **32°F (0°C)** या इससे नीचे जमी हुई अवस्था में रहती है, यह आमतौर पर उच्च अक्षांश और उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों में पाई जाती है।
 - परमाफ्रॉस्ट मृदा, चट्टानों, रेत का मशिरण है जो वर्ष भर बर्फ से जमी हुई एक परत के रूप में होती है।
- **ग्लोबल वार्मिंग** के परिणामस्वरूप **परमाफ्रॉस्ट पघिलता** (स्थायी रूप से जमी हुई मृदा या चट्टान का पघिलना) है, जिसके कारण भूस्खलन जैसी घटनाएँ देखने को मिलती हैं जो बुनियादी ढाँचा को प्रभावित कर सकती हैं।
 - **भारतीय हमिलय में परमाफ्रॉस्ट और आपदाओं** के बीच संभावित संबंध की जानकारी का अभाव एक महत्वपूर्ण अंतर है, जिसमें दक्षिण ल्होनक ग्लेशियल झील (सकिक्मि) के फटने जैसी हाल की घटनाएँ भी शामिल हैं।
 - भारतीय हमिलय में **परमाफ्रॉस्ट और प्राकृतिक आपदाएँ**, जैसे कि हाल ही में सकिक्मि में दक्षिण ल्होनक ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड, के बीच संभावित जानकारी के अभाव का परिणाम है।
- ग्लेशियोलॉजिस्ट का लक्ष्य आर्कटिक क्षेत्रों में परमाफ्रॉस्ट का अध्ययन करके **आँकड़ों के अंतराल को कम करना** तथा हमिलयी स्थलाकृति के नषिकरणों का लाभ उठाना है।
 - इसका लक्ष्य **स्थानीय समुदायों के बीच पूर्व चेतावनी प्रणालियों** और दीर्घकालिक बुनियादी ढाँचे की योजना के लिये जागरूकता उत्पन्न करना है।



और पढ़ें: [आर्कटिक में परमाफ्रॉस्ट का वगिलन और औद्योगिक संदूषण](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/impact-of-permafrost-collapse-on-himalayan-disasters>

